"राम-नाद"

• जिन पिरीआ सउ नेह से सजण मै नालि । अंतरि बाहर हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ।

अर्थः- हे भाई ! जिस सत्संगियों का प्यारे प्रभु के साथ, साथ बना हुआ है वह सत्संगी सज्जन मेरे सहयोगी हैं । उनके सत्संग की इनायत से

मैं अंदर बाहर दुनिया के कार - व्यवहार में भी चलता - फिरता हूँ, फिर भी परमात्मा को अपने हृदय में संभाल के रखता हूँ ।

जिना इक मनि इक चित धिआइआ सतिगुर सउ चित लाई । तिन की दुख भुख हउमै वडा रोग गइआ निरदोख भए लिवलाई ।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्यों ने गुरु चरणों में चित्त जोड़ के एकाग्र मन से एकाग्र चित्त से परमात्मा का नाम स्मरण किया है, उनके सारे दुख दूर हो जाते हैं, उनकी माया की भूख दूर हो जाती है, उनके अंदर से अहंकार का बड़ा रोग दूर हो जाता है, प्रभु - चरणों में तवज्जो जोड़ के वे पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं ।

गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि रवै समाई । नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभ आई ।

अर्थः- वह मनुष्य सदा प्रभु के गुण गाते हैं, गुण उचारते हैं । हे भाई ! गुरु चरणों में तवज्जो जोड़ के मनुष्य परमात्मा के गुणों में सदा लीन रहता है टिका रहता है । हे नानक! परमात्मा पूरे गुरु के माध्यम से ही मिलता है, आत्मिक अडोलता में आ मिलता है ।

मनमुखि माइआ मोह है नामि न लगै पिआर । कूड़ कमावै कूड़ संघरै कूड़ि करै आहार ।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य के अंदर माया का मोह बना रहता है, इसलिए उसका परमात्मा से नाम में प्यार नहीं बनता । वह मनुष्य ठगी - फरेब करता रहता है, ठगी - फरेब के संस्कार

अपने अंदर इकट्ठे करता जाता है, ठगी - फरेब से ही अपनी आजीविका बनाए रखता है ।

बिख माइआ धन संचि मरहि अंति होई सभ छार । करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभ विकार ।

अर्थः- हे भाई ! आत्मिक मौत लाने वाली माया का धन मनुष्य के अंत समय उसके लिए तो सारा राख हो जाता है, पर इसी धन को जोड़ - जोड़ के जीव आत्मिक मौत सहेड़ते रहते हैं, अपनी तरफ से तीर्थ - यात्रा आदि निहित हुए धार्मिक कर्म करते रहते हैं, शारीरिक पवित्रता रखते हैं, एक समान हरेक संयम करते हैं, पर उनके अंदर लोभ टिका रहता है विकार टिके रहते हैं ।

नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होई खुआर ।

अर्थः- हे नानक ! अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य सारी उम्र जो कुछ करता रहता है वह परमात्मा की हजूरी में स्वीकार नहीं होता, वहाँ पर वह मुसीबत में ही रहता है ।

सभना रागा विचि सो भला भाई जित वसिआ मनि आई । राग नाद सभ सच है कीमत कही न जाई ।

अर्थः- हे भाई ! सदा स्थिर हरि - नाम का नाम जपना ही मनुष्य के लिए सब कुछ है, सदा स्थिर हरि - नाम ही मनुष्य के लिए राग है नाद है, हरि - नाम के स्मरण का मूल्य बयान नहीं किया जा सकता ।

रागै नादै बाहरा इनी हुकम न बुझिआ जाई । नानक हुकमै बूझै तिना रासि होई सतिगुर ते सोझी पाई । सभ किछ तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाई । (4-1423)

अर्थः- हे भाई ! सारे रागों में वह हरि - नाम - स्मरण ही अच्छा उद्यम है, क्योंकि उस स्मरण से ही परमात्मा मनुष्य के मन में आ बसता है । परमात्मा का मिलाप राग की कैद से परे है, नाद की कैद से परे है । इन रागों - नादों से परमात्मा की रज़ा को समझा नहीं जा सकता । हे नानक ! जो - जो मनुष्य परमात्मा की रज़ा को समझ लेता है उनके लिए राग भी सहायक हो सकता है वैसे सिर्फ राग ही आत्मिक जीवन के रास्ते में सहायक नहीं हैं । हे भाई ! गुरु के माध्यम से ये बात समझ आ जाती है कि सब कुछ उस परमात्मा से ही हो रहा है, जैसे उसकी रजा है, वैसे ही सब कुछ हो रहा है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"